आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2745 • उदयपुर, शुक्रवार 01 जुलाई, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

सुगम हुई नरेन्द्र के जीवन की राह

जिन्दगी, उम्र और हालात के किस मोड़ पर कब कैसी करवट ले, कोई नहीं जानता। सब कुछ बदल जाता है, सिर्फ कुछ ही पलों में। मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिला के जमुड़ी कस्बे के नरेन्द्र रौतेल (32) के साथ वक्त ने कुछ ऐसा ही किया कि रफ्तार से चल रही जिन्दगी को अचानक ब्रेक लग गया, ट्रेन के पहियों ने दोनों पैर उससे छीन लिए। नरेन्द्र 2016 में उड़ीसा के रेडाखोल में एक भवन निर्माण कम्पनी में सुपरवाईजर का काम करता था। नोटबंदी के दौरान वह घर पर पैसे भेजने के लिए ट्रेन से बैंक के लिए निकला। बामूर रेलवे स्टेशन से थोड़ा पहले सिगनल न मिलने से ट्रेन रूकी हुई थी। पैसा भेजकर कार्यस्थल पर जल्दी पहुंचने की दृष्टि से वह ट्रेन से वही उतर ही रहा था कि ट्रेन चल पड़ी।

नरेन्द्र के दोनों पांव पहियों की चपेट में आ गये। इलाज के दौरान दोनो पैर घुटने के नीचे से काटने पड़े। भुवनेश्वर, दिल्ली और मध्यप्रदेश में दो वर्ष तक ईलाज और मदद के लिए चक्कर लगाये पर सब जगह निराशा ही मिली। इसी दौरान भाई की मौत, भाभी का अन्यत्र चले जाना और खुद की दिव्यांगता दिन ब दिन घर की दयनीय दशा का कारण बनती जा रही थी। तभी उसे नारायण सेवा संस्थान की जानकारी मिली। वह 2019 में पहली बार संस्थान में आया जहां संस्थान की निदेशक वंदना जी अग्रवाल और प्रोस्थेटिक एण्ड ऑर्थोटिक विभाग प्रमुख डॉ. मानस जी रंजन साहू ने हौसला दिया। कृत्रिम पांव लगाए, चलने की ट्रेनिंग दी साथ ही उसे कम्प्यूटर का बेसिक प्रशिक्षण दिया गया। 6 मार्च 2022 को संस्थान में ही सिलाई सीख रही विकलांग नीलवती के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। कुछ दिन पहले नरेन्द्र ने संस्थान से अनुरोध किया कि पति–पत्नी सयुक्त व्यापार शुरू कर परिवार के 8 जनों का भरण–पोषण करना चाहते हैं। इसके लिए उसे अपने गांव से 2–3 किलोमीटर रोजाना आना–जाना होगा और इतनी दूरी कृत्रिम अंग के सहारे तय करना दूभर है। संस्थान ने दिव्यांग नरेन्द्र के परिवार को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए 6 जून को करीब एक लाख की लागत की बेट्री ऑपरेटेड मोटराईज्ड व्हीलचेयर निःशुल्क भेट की। जो सड़क और घर दोनों जगह काम आ सकती है। मदद पाकर नीलवती और नरेन्द्र मुस्कुरा उठे।

कृत्रिम पैर पाकर नफीसा खुश

कोलकता के मिलनशेख (33) के घर नफीसा का जन्म हुआ। परिवार में खुशी का माहौल था। लेकिन जब उसे करीब से देखा तो परिवार में मायूसी छा गई। पता चला कि जन्म से ही बायां हाथ और पैर अर्ध विकसित है। माता–पिता की चिन्ता दिन–ब–दिन बढ़ती गई। खेती करने वाले पिता का एक–एक दिन काटना मुश्किल होने लगा। दिव्यांग बेटी के इलाज के लिए जगह–जगह जाने लगे लेकिन धन के अभाव में हर जगह निराशा ही हाथ लगी। कुछ महिने पहले परिजन नफीसा को लेकर कोलकाता के पोलियों हॉस्पिटल में इलाज हेतु गए तो डॉक्टर ने कहा–यह कभी चल नहीं पाएगी। व्हीलचेयर पर ही इसका जीवन निर्भर रहेगा। माता–पिता हताश होकर घर लौट आए। एक दिन सोशल मीडिया के जरिए पता चला कि उदयपुर में नारायण सेवा संस्थान में दिव्यांगों निःशुल्क में इलाज होता है तो उनके दिल में एक आस जगी।

संस्थान के सम्पर्क कर अपनी बेटी की व्यथा सुनाई। 3 जून 2022 को नफीसा को लेकर माता–पिता संस्थान आये तब संस्थान की चिकित्सकीय टीम ने जांच की और पैर का नाप लेकर निःशुल्क कृत्रिम पैर बनाकर बेटी को पहनाया और कुछ दिन उसे चलने की ट्रेनिंग दी गई। नफीसा सुल्ताना मुस्कुराते हुए आराम से जब चलने लगी तो माता–पिता के आंखों से खशी से खुशी के आंसू बह निकले।

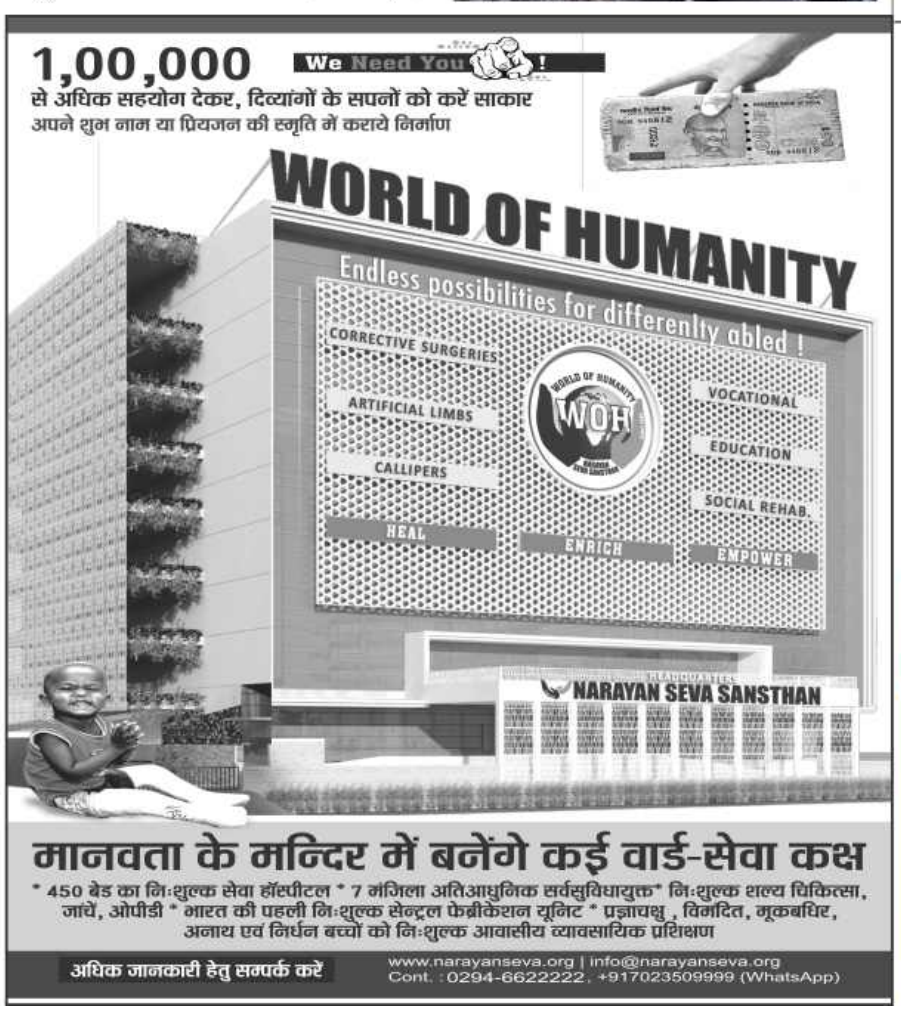

सदगुरु ही सच्चा मित्र

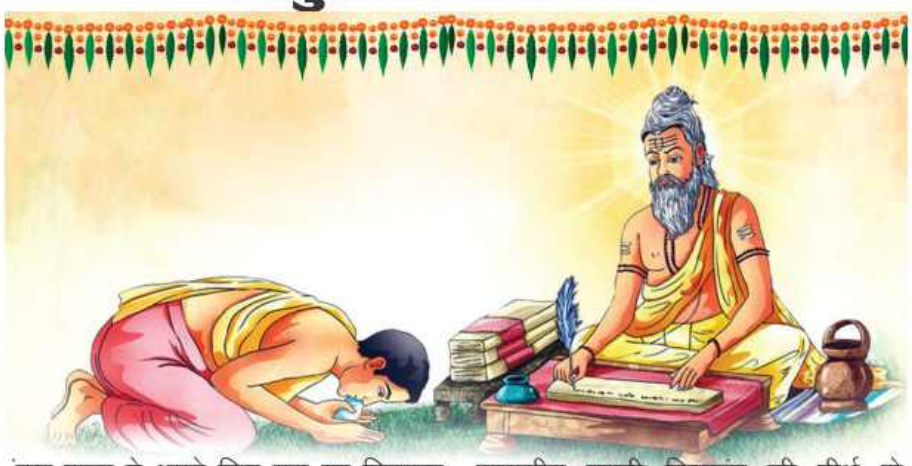

एक राजा ने अपने लिए गुरु का विज्ञापन किया। शर्त थी कि जिसका आश्रम सबसे बड़ा व आकर्षक होगा, उसे गुरु बनाया जाएगा। बहुत से साधु–सन्यासी पधारे। राजा ने पांच को चुना और कहा कि वे नगर के बाहर खाली जमीन पर आश्रम बनवा लें। प्रत्येक ने आश्रम निर्माण हेतु जमीन ले ली। कुछ दिनों बाद राजा प्रगति देखने आए। पता चला चार साधु निर्माण की देखरेख में खूब सक्रिय हैं, पर एक पेड़ के नीचे आनन्दमग्न बैठे हैं। राजा ने पूछा, क्या आपका आश्रम नहीं बनेगा ? जवाब मिला, मेरे आश्रम की दिवारों पर पृथ्वी–आकाश दोनो मिलते हैं। मुझे और निर्माण की जरूरत नहीं है। वस्तुतः राजा विवेकी थे, उन्हें सदगुरु मिल गया। बहुधा हम दुनियावी चीजें देखकर गुरु चुनने चलते हैं और धोखा खा जाते हैं। सच्चा गुरू दिखावे से दूर होता है। वह कभी किसी से नहीं कहता कि मेरे पास आओ। सच्चा गुरु शिष्य को बताता है कि हर किसी को अपनी यात्रा स्वयं करनी पड़ती है–आत्म दीपो भव। ब्रह्मालीन स्वामी शिवानंद जी तीर्थ के अनुसार कई बार साधक इस भौतिक शरीर को गुरू समझने की भूल करते हैं। शरीर तो उस परमात्मा का ऊपरी छिलका है। छिलके की सेवा करना परम कर्तव्य है, पर उसे ही सर्वस्व समझ लेना भारी भूल हैं। दरअसल, गुरू सत्ता की दो भूमिकाएं हैं। एक तो अपनी अंतरात्मा के रूप में बैठा प्रेरणा देता रहता है। दूसरा, वह जिसे व्यक्ति के रूप में वरण किया जाता है। सच्चा गुरू शिष्य का आत्मशक्ति को विकसित और विशिष्ट बनाने का सूत्र भी देता है। वस्तुतः यह दोहरी पद्धति है। गुरु के अनुदान बरसते हैं और शिष्य को सघन श्रद्धा का आरोपण करना पड़ता है। सच्चे गुरु का प्रभाव शाश्वत होता है। सद्गुरू से बड़ा दूसरा सच्चा कोई मित्र हो ही नहीं सकता। राम ने ऋषि वशिष्ठ के रूप में और श्रीकृष्ण ने ऋषि सांदीपनी को गुरु के रूप में वरण किया था। सच्चा गुरु अपनी ऊर्जा, योग्यता, उदात्तता को शिष्यों की अंतरात्मा में भी जगा देता है।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

30 साल का एक युवा हो गया। पढ़ा–लिखा भी पण आलसी।

सुनते है हम–

यों न हम आलस में बैठें,
जिस्म से कुछ काम लें।
हाथों से खिदमत करें,
मुँह से प्रभु का नाम लें।।

लेकिन ये कहता था करता नहीं था। आलसी बना बैठा रहता था। माता ने एक चमकीला पत्थर दिया होगा ऐसा। ऐसा होगा वैसा होगा। ऐसा होगा, ये मन को बहुत अच्छा करने की कथाएं है। माता ने कहा– बेटा इसको बेचना मत। इसका मौल करा लाना, केवल मौल कराना। मालन ने कहा– तीन किलो पालक ले जाओ। मेरे बच्चे के खेलने में काम आयेगा। पीतल के व्यापारी ने कहा– दस किलो स्टील के बर्तन ले जाओ, थाली ले जाओ, लोटा ले जाओ। मेरे घर में रखा रहेगा तो अच्छा लगेगा। लेकिन जौहरी ने कहा– ये तो डायमंड है, ये हीरा है। दस लाख रुपये में बेच दो। बोले– मेरी माँ ने कहा– बेचना नहीं हैं, केवल मौल करा लेना। तो माँ ने मौल किया। माँ ने बताया–ये तेरा लीवर है। माँ ने बताया ये 550 तरह के रसायन पैदा करने वाला लीवर है। ये तेरी आंते हैं। छोटी आंत और बड़ी आंत। ये चुपचाप अपना काम करती है। आज सुबह मैं सोच रहा था–ये बिना बोले अपना काम करती है। इनकी भी बोली तो होती है। हाँ, कभी कलर डोपलर होवे किसी को एक बार में, सोनोग्राफी में एक बार खड़ा था। तो किन्ही के कलर डोपलर हो रहा था कि खून जंघा में किस गति से दौड़ रहा है। नस में खून किस रूप में दौड़ रहा है तो उसकी आवाज भी आती है। जैसे ही स्वीच आफ– ऑन करते हैं तो खून की बहुत जोरों से आवाज भी आती है। तो इनकी भी आवाज होती है हम पहचान नहीं पाते हैं।

ये जीवन का आनन्द लाला। अपना देह देवालय मिल गया।

वृद्ध का अनुभव

जर्मनी के सम्राट फ्रेडरिक महान यह जानकार बहुत चिंतित हुए कि उनके देश की आर्थिक स्थिति दिनो–दिन खराब होती जा रही है। उन्होंने एक दिन राज्य के कर्मचारियों को विचार–विमर्श के लिए बुलाया तथा उनसे पूछा कि राज्य के खजाने की आय कम होने का क्या कारण हैं? दरबार में यह प्रश्न उठते ही सन्नाटा छा गया। अचानक दूर बैठे एक वयोवृद्ध नागरिक ने कहा, सम्राट की आज्ञा हो तो मैं इस प्रश्न का उत्तर देने को तैयार हूं। उस व्यक्ति ने मेज पर प्याले में रखें बर्फ के टुकड़े को उठाया तथा उसे अपने पास बैठे हुए एक व्यक्ति को देते हुए कहा, इसे अपने पास बैठे व्यक्ति को दे दो। एक के बाद दूसरे के हाथों आगे बढ़ाते हुए इसे सम्राट के पास पहुंचाना है। देखते ही देखते बर्फ का टुकड़ा अनेक हाथों से होता हुआ सम्राट के हाथों में पहुंचा तो उसका आकार एक चौथाई हो चुका था। सम्राट ने पूछा बर्फ का यह टुकड़ा यहां तक आते–आते इतना छोटा कैसे हो गया? वृद्ध ने बताया कि बर्फ के टुकड़े की तरह प्रजा से वसूले गए कर की राशि सरकारी कोष में पहुंचते–पहुंचते चौथाई रह जाती है। सम्राट की शंका का समाधान हो गया। उन्होंने उसी समय भ्रष्ट कर्मचारियों की छटनी शुरू कर दी। कुछ ही दिनों मे राज्य की आय बढ़ने लगी।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें
कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

सम्पादकीय

मन मानव का सबसे बड़ा सहयोगी भी है और असहयोगी भी। यदि मन पर अपना नियंत्रण है, उसके निर्णयों में विवेक का प्रयोग है तो उससे बड़ा सहयोगी कोई नहीं। और यदि मन का हम पर नियंत्रण है तो वह हमारे उत्थान के बजाय पतन का उत्तरदायी ज्यादा हो सकता है। मन को साधने के लिए ही समस्त जप, तप और साधन किये गये हैं, ऐसा प्रतीत होता है। मन एक शक्तिशाली संसाधन है। यह अत्यंत त्वरायुक्त, ऊर्जायुक्त तथा मुक्तियुक्त संसाधन है, पर इसका उपयोग ही इसकी सकारात्मकता और नकारात्मकता का निर्धारण करता है। मन को तुरंग या घोड़ा भी कहा गया है जो नियंत्रण में रहे तो सवार को मनवांछित मंजिल तक लेकर चला जाये और बिगड़ जाये तो सवार ही न होने दे। अतः मन को साधने के लिए अन्य साधनों के साथ–साथ सेवा का भी अपना उपयोग है।

कुछ काव्यमय

दाता बनना है कठिन,
फिर भी बनो जरूर।
दाता बनते ही नहीं,
ईश्वर हम से दूर।।
देने वाले का सदा,
हृदय कमल विकसाय।
अनजाने ही हो रहा,
मुक्तिगामी उपाय।।
देते देते मानवी,
देव योनि हो जाय।
बैकुण्ठा वासा रहे,
जनम मरण कट जाय।।
देने का अवसर मिले,
वह बड़भागी होय।
बस लेता– लेता रहे,
तो यह जीवन खोय।।
लेना कम देना अधिक,
रखना हरदम ध्यान।
सुर कहलायेंगे मरे,
जीते जी इन्सान।।

अपनों से अपनी बात

जीवन का सार

एक शिश्य ने कबीर से पूछा विवाह अच्छा या सन्यास? कबीर बोले, दोनों में जो भी हो उच्चकोटि का हो। यह कैसे महाराज? कबीर ने उसे अपने साथ ले लिया। दिन के बारह बज रहे थे। कबीर कपड़ा बुनने लगे। उजाला था फिर कबीर ने अपनी धर्मपत्नी को दीपक ल लाने के लिए कहा। वह तुरन्त जला कर ले आई और उनके पास रख गई। ाम को वह शिश्य को एक पहाड़ी की तलहटी पर ले गए। यहां ऊचाई पर एक वृद्ध साधू कुटी बनाकर रहते थे। कबीर ने साधू को आवाज दी। वृद्ध बीमार साधु मुश्किल से ऊंचाई से उतर कर नीचे

आया। कबीर ने पूछा, आपकी आयु कितनी है? साधु ने कहा अस्सी बरस। यह कहकर वह फिर से ऊपर चढ़ा। कठिनाई से कुटी में पहुंचा। कबीर ने फिर आवाज दी और नीचे बुलाया। आप यहां पर कितने दिन से निवास करते हैं। उन्होंने बताया चालीस वर्श से। चढ़ने–चढ़ने से साधु की सांस फूलने लगी, वह बुरी तरह थक गया परन्तु उसे तनिक भी क्रोध न आयां दोनो का उदाहरण देते हुए कबीर बाले गृहस्थ बनना हो तो दोनों के प्रेम में पूर्ण वि वास हो, समर्पण हो और सन्यासी बनना हो तो दुर्व्यवहार, क्रोध का समावे ा जीवन में बिल्कुल भी ना हो। यही जीवन का सार है। बंधुओं! समय गती ील है। हम पूर्ण चिन्तन–मनन के साथ इसका जितना अधिक उपयोग कर पाएंगे, उतना ही सफल होंगे। हमें अच्छे व बुरे में फर्क करने के लिए आत्म वि लेशण करते रहना होगा। शार्ट टेम्पर्ड व्यक्ति कभी भी जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो सकता। अतएव हम भ्रान्त मन से विचार कर कोई भी काम करेंगे तो परिणाम अनुकूल ही होगा।

–कैलाश 'मानव'

अमूल्य है प्रशंसा

हमारे भीतर अगर धन्यवाद का भाव आ जाए तो जीवन सुखमय हो जाएगा। हर अच्छाई की प्रशंसा करके लोगों के दिलों को जीता जा सकता है। एक परिवार में पति– पत्नी और बच्चा बडे प्यार से रहते थे। पति और पत्नी दोनों जॉब करते थे। गृहस्थी आराम से चल रही थी। एक दिन की बात है कि पत्नी थकी–मांदी ऑफिस से लौटी, उसने जैसे–तैसे भोजन बनाया और रख दिया। देर शाम पति घर लौटा। उसने उस भोजन को प्रेम से खा लिया, परन्तु उसके बेटे को भोजन नहीं भाया।

बेटे ने रात को सोते समय पिता से पूछा पापा ! आज भोजन कच्चा था, फिर भी आपने खा लिया। मम्मी को

कुछ नहीं बोला तब पिता ने प्यार से बेटे के सिर पर हाथ फिराते हुए कहा– आपकी मम्मी रोजाना अच्छा भोजन बनाती है, आज उनकी तबीयत ठीक नहीं थी। इसीलिए अच्छा भोजन नहीं बना पाई, कोई बात मैंने कुछ नहीं कहकर घर में अशांति को रोक लिया। बेटा पिता से एक अच्छी बात सीख गया। लेकिन दूसरी कहानी में एक पत्नी ने पति की थाली में घास–फूंस, कंकर –पत्थर ढककर परोस दिया। पति ने भोजन के लिए ऊपर की थाली हटाई तो घासं–फूंस देखकर आग–बबुला हो गया और जोर–जोर से कहने लगा कि मुझे तुमने जानवर समझा है क्या? पत्नी पलटकर जवाब देती है–पतिदेव ! आज शादी को 5 वर्ष हो गए मैंने अच्छे–अच्छे व्यंजन बनाकर आपको परोसे, परन्तु आपने कभी भी अच्छा या बुरा, कुछ भी नहीं कहा। मुझे लगा कि आप जानवर ही है जो अच्छे को अच्छा कहना नहीं जानते। यह सुनकर पति ने सीख ली कि मुझे उसकी अच्छाई भी बताना चाहिए थी, ताकि वह हमेशा खुश रहती । **– सेवक प्रशान्त भैया**

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

कैलाश ने गाड़ी से निकल कर ऊपर मदद के लिये आवाजें दी, इस बीच ड्राइवर भी दौड़ता हुआ वहां पहुँच गया, उसने गाड़ी को दूर से ही लहराते व खड्डे में गिरते देख लिया था। उसने कैलाश को सलामत देखा तो राहत की सांस ली। अब उसने सड़क से गुजरती ट्रकों को रोकने की कोशिश की। कोई रूक गया तो कोई गाड़ी आगे बढ़ा गया। कैलाश अपने ऑफिस के लंच टाईम में गाड़ी चलाने निकला था। लंच के बाद ऑफिस में एक महत्वपूर्ण बैठक थी जिसमें उसका उपस्थित होना अनिवार्य था। वह ऑफिस से बिना किसी को कुछ कहे ही निकल आया था। एक क्षण पहले तो उसकी जान के लाले पड़े थे और अब वह किसी भी तरह ऑफिस पहुंचने की उधेड़बुन कर रहा था। कुछ लोगों की मदद से वह उपर सड़क पर पहुँचा, पास ही एक हेन्डपम्प नजर आ गया, वहां अपना मुँह व हाथ, पैर धोये, कपड़े झटके और वह ऑफिस जाने के लिये तैयार था। यह आश्चर्य की ही बात थी कि इतने भीषण हादसे के बावजूद उसके शरीर पर कहीं एक खरोंच तक नहीं आई थीं उसने ड्राइवर को बताया कि वह ऑफिस जा रहा है, जीप को किसी तरह निकलवा कर नारायण सेवा पहुंचा दे।

कैलाश ने सड़क से गुजरते एक वाहन को रोका और किसी तरह ऑफिस पहुंचा। उस दिन एक टेण्डर पास करना था। कम से कम दर वाले निविदादातासे दरें तय कर कार्य आवंटित करना था। सभी उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। बिना किसी को दुर्घटना के बारे में एक शब्द भी बताए उसने अपना कार्य पूर्ण किया। उधर ड्राइवर ने अन्य ट्रक ड्राइवरों की मदद से रस्से डाल कर जीप उपर खींची और कारखाने पहुंचाई।

अंश - 142

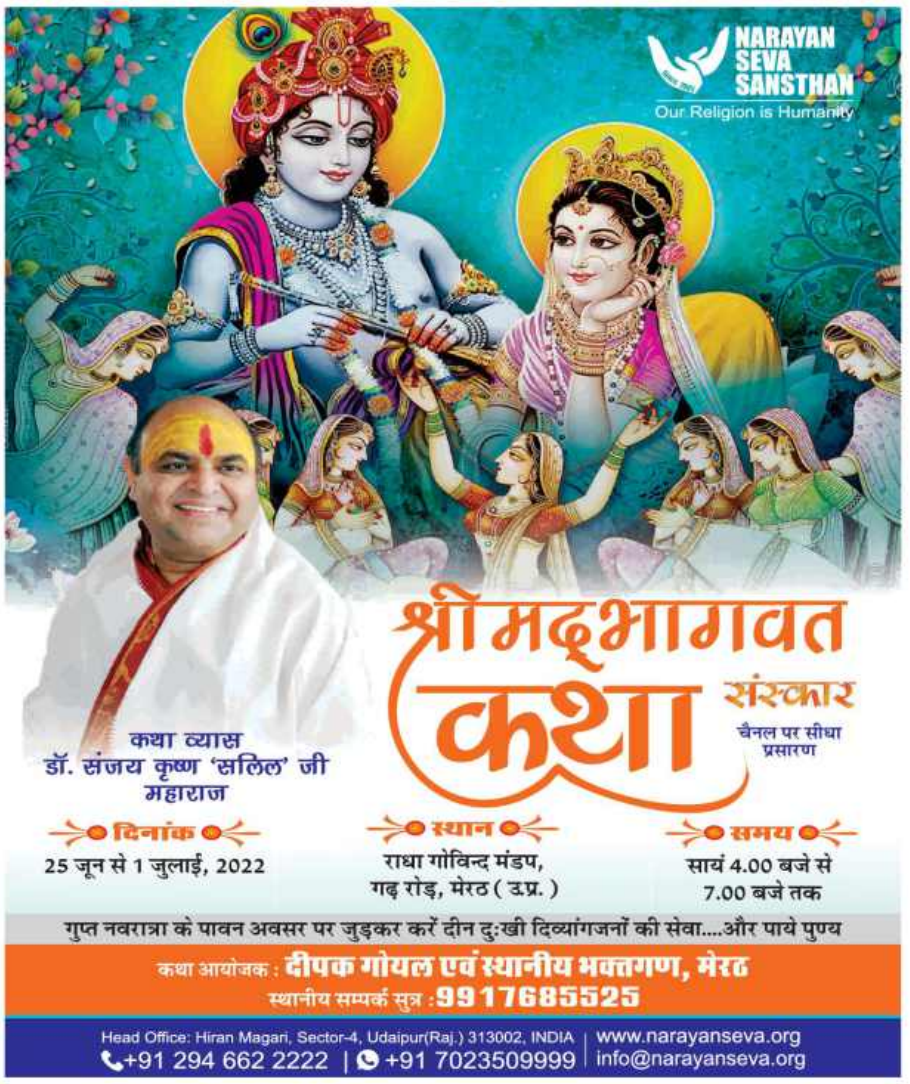

टेढ़ापन खत्म, हरगुन हुई चलने लायक

मानसिंह (40) निवासी कैथल हरियाणा की छोटी बेटी हरगुन कौर (10) के दोनों पांव जन्म से ही घुटनो से जुड़े हुए थे। इस कारण चल–फिर नहीं पाती थी। उसे उठा कर एक जगह से दूसरी जगह ले जाना पड़ता था। इसी वजह से वह चाहते हुए भी स्कूल भी नहीं जा पाई। माता–पिता ने बहुत इलाज कराया और पैसे भी काफी खर्च किए पर कोई फायदा नहीं हुआ। नारायण सेवा संस्थान की जानकारी सोशली मीडिया से मिलने पर बेटी को लेकर मानसिंह 22 अप्रेल 2022 को नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर आए। डॉक्टर द्वारा जांच कर भर्ती किया गया और 24 अप्रेल को बाएं पांव का ऑपरेशन कर प्लास्टर पट्टा बांधा गया। कुछ दिन बाद डिस्चार्ज किया गया। फिर 1 माह बाद 29 मई को पुनः आए और प्लास्टर हटाकर जांच की और 1जून 2022 को कैलिपर्स पहनाया। मानसिंह के अनुसार इस 1 माह में हरगुन के पांव में पहले से बहुत सुधार दिखा और टेढ़ापन ठीक भी हुआ है।

दूसरे पांव का ऑपरेशन 2 जून को हुआ हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि पहले पांव की तरह ये पांव भी बिल्कुल ठीक हो जाएगा और मेरी बेटी चलने–फिरने लगेगी। मैं संस्थान का जितना धन्यवाद करूं उतना कम है। यहां पर सब सुविधाएं बिल्कुल निःशुल्क मिली और साधको का व्यवहार भी बहुत अच्छा था।

गैजेट्स यूज करते वक्त आंखों का भी ख्याल रखें

कम्प्यूटर, मोबाइल, टैबलेट और लैपटॉप का इस्तेमाल करते समय आंखों को राहत देना भी जरूरी है। कुछ बातों का ध्यान रखकर गैजेट्स से अपनी आंखों को सुरक्षित रख सकते हैं। जानिए इसके बारे में .....

कम रोशनी में काम न करें लैपटॉप या दूसरे गैजेट्स का इस्तेमाल समय इस बात का ध्यान रखें कि उस जगह अंधेरा या रोशनी पर्याप्त कम न हो, इससे गैजेट्स से निकलने वाली नीली रोशनी से निकलने वाले नुकसान का असर कम होगा।

ब्राइटनेस घटाएं गैजेट्स की ब्राइटनेस को घटाकर भी आंखों पर पड़ने वाले नीली रोशनी के बुरे असर को कम किया जा सकता है। इसके साथ ही बैटरी की लाइफ को बढ़ाया जा सकता है।

डार्क थीम का प्रयोग करें ब्राउजर का इस्तेमाल करते समय डार्क थीम का प्रयोग करें। अपने फोन की सेटिंग में जाएं। इसके बाद डिस्पले का विकल्प चुनें और नाइट लाइट पर जाकर सेटिंग ऑन करें। इसकी तरह ब्राउजर की सेटिंग में जाकर डार्क थीम अप्लाई कर सकते हैं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

तुलसी इस संसार में,
भाँति–भाँति के लोग।
सबसे हिलमिल चालिये,
नदी, नाव संजोग।।

उन्होंने रिलीव नहीं किया, चाहते तो कर सकते थे। एक दिन में कर सकते थे, एक महिने में कर सकते थे। लेकिन उस सीनियर एकाउन्ट्स ऑफिसर को चार्ज दे देते। वो मेरा चार्ज सम्भाल लेते, बहुत सरल था। उनको नहीं करना था, नहीं किया। नौ महिने, आठ– नौ महिने तक नहीं किया। फिर बाद में गोपालजी बाहेती। नौ महिने बाद में पुनः जी.एल. मीणा साहब ने गोपाल जी बाहेती का बाँसवाड़ा ट्रांसफर किया। और जिस दिन में रिलीव हुआ उसके एक दिन पहले बाम्बे था, चैनराजजी लोढ़ा साहब के पास।

उन्होंने कहा– बाबूजी, अपना मानव मंदिर हॉस्पीटल उसके लिये कुछ धन ले पधारिये। इधर श्री गोपालजी बाहेती ने कहा था कि– अमुक तारीख को शुक्रवार को, मैं पाँच बजे चार्ज लेने आ पाऊंगा। बाद में आपको रिलीव नहीं कर पाऊंगा। कठिनाई होगी, किसी भी हालत में। शुक्रवार को पाँच बजे बासवाड़ा पहुँचना था। बृहस्पतिवार को शाम को बस बोम्बे से डाईरेक्ट बाँसवाड़ा वाली नहीं मिली।

बाम्बे से डूंगरपुर वाली मिली। डूंगरपुर आया तीन बज गयी थी, बस लेट हो गयी। कुछ जीप, यहाँ से जीप डूंगरपुर से बांसवाड़ा जाती थी, उस स्थान पर दौड़ता – दौड़ता पहुँचा। जीप भर गयी थी, बैठने की जगह नहीं थी। मेरे को जाना जरूरी था। उसने कहा– खड़े – खड़े जीप में चल सकते हो तो, खड़े हो जाइये? एक तरह से लटकने जैसी स्थिति। पहले से भी बारह– पन्द्रह महानुभाव खड़े थे। जेब में कुछ रुपये भी थे, उसकी भी चिन्ता थी। पौने पाँच बजे मैं बाँसवाड़ा पहुँचा। प्रभु को प्रणाम करते हुए गोपालजी बाहेती साहब को चार्ज दिया। और बाँसवाड़ा की यात्रा सादर सम्पन्न हुई, और भगवान की कृपा से 1990 के जुलाई और अगस्त में जो ठाकुर जी काम करवा पाये उसका भी विवरण आदरणीय मुकेशजी साहब के साथ :–

सेवा ईश्वरीय उपहार– 495 (कैलाश 'मानव')

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023